मसीह - सेवकाई की तैयारी

पाठ-11

परमेश्वर के साथ मनुष्य का सम्पूर्ण सम्बन्ध टूटने का कारण होने वाले आदम के पाप के पश्चात मनुष्य को एक बार फिर परमेश्वर से मेलमिलाप को आवश्यकता है। मनुष्य के पाप धूले जाने है और उसके अपराध दूर किये जाने है। इसीलिए पवित्रात्मा के द्वारा परमेश्वर के पुत्र ने शरीर में मनुष्यों को मध्य निवास किया। पवित्रात्मा ने शारीरिक संबंध के बिना ही गर्भ धारण करने का आश्चर्यकर्म किया। परमेश्वर का अभिषिक्त को अर्थात मनुष्यों के पापों से उद्धार करने के लिए मसीहा को इस दुनिया में किस तरह भेजा जाऐगा इसका निवरण परमेश्वर ने स्वर्गदूत जिब्राइल द्वारा मरियम को और एक दूसरे दूत के द्वारा यूसुफ को प्रकट किया। इट घटना के बाद लोग उन्हें किस दृष्टि से देखेंगे या फिर उनके बारे में क्या बोलेंगे इसकी परवाह किये बिना मरियम और यूसुफ ने परमेश्वर का सेवक दाय होने के लिए अपनी इच्छा जाहिर की। ने दोने परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थे इसलिऐ परमेश्वर ने अपनी सेवा में उनकों इस्तेमाल किया।

उसने उनसे कहा तुम मुझे क्यों ढूंढते थे? क्या नही जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है? परन्तु जो बात उसने उनसे कही, उन्होंने उसे नही समझा। लूका २:४९-५०

तीय वर्ष की आयु होने पर जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया और पवित्रात्मा शारीरिक रुप में कबर के समान उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुईः तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ। लूका ३:२१-२२

यीशु के बपतिस्मा लेने के बाद फिर यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ, यरदन से लौटा, और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ न खाया, और जब वे दिन पूरे हो गये, तो उसे भूख लगी। लूका ४:१-२ वह शैतान के द्वारा परीक्षा लेने के बाद नासरत को अपने घर गया। वहाँ

आराधनालय में यशायाह ६१:१-२ को पढ़ते हुए लोगों को प्रकट किया कि मसीह के आगमन की परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसे में पूरी हुई है। इसके बाद यीशु ने उन लोगों को चुनना आरम्भ किया जो उसके सुसमाचार को उसके पुनरुत्थान के बाद लोगों को सुनाऐंगें।

जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों के बीच निवास करते हुए जितनों ने उसे ग्रहण किया उन सभी पर अपने आप को मसीहा होने का प्रमाण दिया। मनुष्यों के पापों के लिए अपने आप को सम्पूर्ण बलिदान करके चढ़या। इस दुनिया में अपने पूरे जीवन काल में लोगों के बडे समूहों के मध्य में सार्वजनिक तौर पर बहुत से आश्चर्यकर्म किये। बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की द्वारा की गई सारी भविष्यद्वणियों को पूरा किया। यीशु के इन आश्चर्यकर्मों के द्वारा बहुत से लोगों की भलाई हुई। यीशु से ईर्ष्या करने वाले, उनका विरोध करने वाले और उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचने वाले को भी इन आश्चर्यकर्मों को मानना पड़ेगा। कपटी धर्मगुरुओं ने केवल अपने अधिकार और प्रतिष्ठा के कारण यीशु का तिरस्कार किया। ऐसा करने के लिए उन्होनें तथा लोगों के मध्य में अपने आप को महत्वपूर्ण बताने वाले खुद के नियम और आचारों का भी उल्लंघन किया।

उनके शिष्यों ने यीशु का संदेश सुना। उनके दृष्टान्तों और दूसरी शिक्षाए और आश्चर्यकर्मों की गवाही दी। धर्मगुरुओं के विरोध के बावजूद भी मृतकों का जिलाया जाना, अंधों का दृष्टि पाना, बहरों का सुनना आदि विषयों पर उनके शिष्यों ने लोगों को गवाही दी। शिष्यों को सीखने के लिए बहुत सी बातें है जिनके लिए यीशु ने ऐसा कहा मुझे तुमसे और भी बहुत से बातें कहनी है, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नही सकते। परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आऐगा, तो तुम्हे सब सत्य का मार्ग बतायेगा। क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुन्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हे बताएगा। यूहन्ना १६:१२-१४

यीशु ने अपनी प्रार्थना के अनुसार अपना सम्पूर्ण बलिदान चढ़ाने के लिए अपने आप को तैयार किया। यीशु ने यह बातें कही और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता वह घडी आ पहुंची है अपने पुत्र को महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करें..... जो कार्य तूने मुझे करने

को दिया था उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है... १-४ मैने तेरा नाम उन मनुष्यो पर प्रकट किया है जिन्हें तूने जगत में से मुझे दिया.... जो वचन तूने मुझे दिये, मैने उन्हें उन तक पहुँचा दिये और उन्होंने उनको ग्रहण किया, और सच-सच जान लिया कि मै तेरी ओर से आया हूँ और विश्वास कर लिया है कि तू ही ने मुझे भेजा है ...१७:६-८ इसलिए सत्य के द्वारा उन्हे पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है। जैसे तूने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैने भी उन्हें जगत में भेजा और उनके लिए मै अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जायें। यूहन्ना १७:१७-१९

मेलमिलाप, छुटकारा और पापों की क्षमा के बारे में परमेश्वर का संदेश को देने वाली यीशु के सेवकाई लगभग अंतिम-चरण में पहुँच गई। इसलिए निर्धारित समय में मनुष्यों के पापों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिये ही यीशु उन्नत स्वर्ग को छोडकर इस धरती पर आया।

फिर उसने उनसे कहा, ये मेरी वे बाते हैं, जो मैने तुम्हारे साथ रहते हुऐ तुमसे कही थी कि अवश्य है कि जितनी बाते मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी है, सब पूरी हों। तब उसने पवित्रशास्त्र बूझने के लिए उनकी समझ खोल दी और उनसे कहा यों लिखा है कि मसीह दुख उठाएगा और तीसरे दिन मरें हुओं में से जी उठेगा, और यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मनफिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हों। और देखो जिसकी मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो। लूका २४:४४-४९

यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मूझे दिया गया है इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बाते जो मैने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओं और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। मत्ती २८:१८-२० आदम के पाप के पश्चात पहली बार मनुष्यों के पापों से छुटकारा पाकर परमेश्वर से मेलमिलाप का एक मार्ग तैयार हुआ।

प्रश्नः

१. यीशु इस धरती पर किस समय आए?
   अ) ..... दिसम्बर २५, क्रिसमस त्यौहार की गणना के दिन
   ब) ..... जब समय पूरा हुआ था निर्धारित समय पर
   स) ..... हमें नही मालूम

२. जिब्राईल के दर्शन के बाद मरियम ने आनन्द के साथ परमेश्वर के कार्य के लिए अपने आप को तैयार किया लेकिन लोगों से डरकर यूसूफ ने मरियम को छोड देना चाहा।
   अ) .....हाँ ब) .....नही

३. नये नियम के लेखकों में से कुछ ने किस तरह परमेश्वर ने अब्राहम इसहाक, याकूब और दाऊद के प्रति अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया, इसे यीशु की वंशावली में लिखा।
   अ) .....हाँ ब) .....नही

४. यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है इस बात को बताने के लिये क्या प्रमाण दिये गये।
   अ) .....आश्चर्यकर्म ब) ..... यूहन्ना की गवाही
   स) .....परमेश्वर की योजना द) .... ऊपर दिये गये सभी

५. इस दुनिया में रहकर यीशु ने कौन सा संदेश दिया?
   अ) .....छुटकारे का मार्ग
   ब) .....परमेश्वर के द्वारा पाप क्षमा
   स) .....परमेश्वर से मेल मिलाप
   द) .....ऊपर दिये गये सभी

मसीह के बारे में गवाहियाँ

पाठ-12

यीशु की इस दुनिया में सेवकाई का मुख्य उद्देश्य यह था कि लोग उनको मसीहा, ख्रीस्त और परमेश्वर के पुत्र के रुप में जान सकें इस सत्य को कुछ लोगों की गवाही में हमें बताया गया है।

बपतिस्मा देने वाला यूहन्नाः

यूहन्ना ने मनफिराव का बपतिस्मा (... नामक ग्रीक शब्द का अर्थ है डुबाया जाना) का यहूदियो के बीच प्रचार किया और यहूदी आकर यरदन नदी के पास यूहन्ना से बपतिस्मा लेने लगे। वे फरीसियों के ओर से भेजे गए थे। उन्होने उससे यह प्रश्न पूछा यदि तू न मसीह है और न एलिय्याह और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है? यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, मैं तो जब से बपतिस्मा देता हूँ परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है जिसे तुम नही जानते अर्थात मेरे बाद आने वाला है ..... दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है। यह वही है जिसके विषय में मैने कहा था कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है ..... यूहन्ना ने यह गवाही दी मेरि आत्मा कबुतर के समान आकाश से उतरते हुए देखा है और वह उस पर ठहर गया।..... वही पवित्रात्मा से बपतिस्मा देने वाला है। और मैने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है। यूहन्ना १:२४-२७, २९-३४ पढ़े)

उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा मूझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली। मत्ती ३:१३-१५

पवित्रात्मा का बपतिस्मा की गवाहीः

पवित्रात्मा ने यीशु के बारे में इस कार्य के द्वारा गवाही दी। और यीशु

बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। मत्ती ३:१६

परमेश्वर (पिता) की गवाही:

परमेश्वर पिता ने इस तरह गवाही दी कि यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे में अत्यन्त प्रसन्न हूँ। यह आकाशवाणी हुई। मत्ती ३:१७.

यीशु अपनी सेवकाई आरम्भ करने से पहले ४० दिन तक उपवास रखा। वह शारीरिक रीति से कमजोर हुए तभी शैतान ने उनकी परीक्षा करके अवरोध उत्पन्न किया। इस परीक्षा लेने हारने के बाद भी शैतान अवसर की ताक में रहने लगा। यीशु ने अपनी सेवकाई आरंभ की। उन्होने पहले १२ शिष्यों को चुना। लोगों के बीच आश्चर्यकार्य करने और उनकी उपदेशों की गवाही होने के लिए इस बारह चेलों को चुना शिष्यों को यह सिखाने के लिए कि परमेश्वर यीशु के साथ है उसने अनेक आश्चर्यकर्म किये।

आश्चर्यकर्म, चिन्ह और अद्भुतकर्म

यीशु ने व्यवस्था और पवित्रशास्त्र के विषय में किसी तरह का प्रशिक्षण नही लिया। फिर भी यीशु ने शास्त्रियों, फरीसियों, सदूकियों और धर्मगुरुओं के समान नही वरन, प्रशिक्षित रब्बियों के समान अधिकार से परमेश्वर का वचन को सिखाया अपनी शिक्षाओं के द्वारा यीशु ने उनके कपटी मन और ह्रदय तथा उनके चालचलन में अंधेपर को उजागर किया। यीशु ने उन्हें यह कहकर लताडा कि वे अहंकार, निर्बुद्धि और ईर्ष्या से प्रेरित है तथा अपने स्तर के अनुसार समाज में नही जी रहे हैं।

यीशु के आश्चर्यकर्मो को देखने के बाद परमेश्वर की महिमा करने के बजाए उन कार्यों को शैतान द्वारा प्रेरित कार्य कहा। मत्ती २३ में यीशु ने उनके बारे में इस तरह कहा

.....वे कहते है लेकिन करते नही। वचन ३

.....मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने कार्य करते है। वचन ५

.....प्रीतिभोज में पहला स्थान ..... वचन ६

.....कपटी शास्त्रियों और फरीसियो तुम पर छय.. वचन १३

.....अंधे अगुवो ..... तुम पर हाथ। वचन १६

.....सांप की सन्तान तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे। वचन ३३

यीशु के जीवन में गलतियाँ ढूँढकर उनकी आलोचना करने के लिए उन्होने अनेक प्रयत्न किये लेकिन हार गए। यीशु के अधिकार के बारे में उन्होंने सवाल किए लेकिन फिर भी हार गए। लूका २३ पढ़िए।

क्रस पर चढ़ाया जाना

यीशु परमेश्वर का पुत्र और अभिष्कि मसीह होने का प्रमाण उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले समय घटित घटनाओं से मिलता है। मत्ती २७:५०-५२ पढ़े।

अ) अन्त में यीशु ने बडे शब्दों में चिल्लाकर अपने प्राणों का अर्पण किया।

ब) तब यरुशलेम के मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट गया।

स) भूकम्प आये और चट्टाने तडक गई।

द) कब्रे खुल गई और उनके सात कब्रों में से निकल आये। यीशु के पुनरुत्थान के बाद पवित्र नगर में बहुतेरे लोगों को दिखाई दिये।

रोमी सैनिक

तब खूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हूआ था उसे देखकर अत्यन्त डर गए और कहा, सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था। मत्ती २७:५४

उनके प्रिय प्रेरित

प्रेरितो ने उनके बारे में यह गवाही दी। इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु मसीह हमारे साथ आता जाता रहा - अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक - जो लोग बराबर हमारे साथ रहे उचित है कि उनमे से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। प्रेरितों के काम १:२१-२२ उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था जिसे हमने सुना और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ - यह जीवन प्रकट हुआ, और हमने उसे देखा और उसकी गवाही देते है, और तुम्हे उस अनन्त जीवन का समाचार देते है जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ - जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हे भी देते है....। यूहन्ना १:१-३

प्रश्नः

१. बपतिस्मा लेकर यीशु तुरन्त पानी में से निकलकर किनारे आएः तब आकाश में से एक शब्द आया कि देखो यह मेरा प्रिय पुत्र है, इससे मैं आनंदित हूँ।

अ) .....हाँ ब) .....नही

२. यीशु ने अधिकार के साथ उपदेश दिया क्योंकि उन्होने दूसरे रब्बियों के समान यहूदियों का पाठशाला में प्रशिक्षण लिया।

अ) .....हाँ ब) .....नही

३. फरीसियों और सदूकियों के बारे में यीशु ने क्या कहा?

अ) अंधे होकर भी मार्ग दिखाने वाले

ब) कपटी

स) अच्छे लोग

द) अ और ब

४. यीशु के प्रिय जनों ने उनके आश्चर्यकर्म, उनकी मृत्यु, गाडा जाना और पुनरुत्थान के बारे में गवाही दी।

अ) .....हाँ ब) .....नही

५. यीशु के बारे में जिनने गवाही दी।

अ) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

ब) पवित्रात्मा

स) पिता

द) ऊपर दिये गये सभी

सेवकाई का आरम्भ

पाठ-13

यूहन्ना १:१-४ में लिखा है आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई है। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

पुत्र परमेश्वर ने पिता परमेश्वर और पवित्रात्मा के साथ स्वर्ग में अपनी महिमा और ऐश्वर्य को छोडकर मनुष्यों के पाप के लिए इस धरती पर आकर अपने आप को एक निर्दोष बलिदान करके चढाया।

मनुष्यों का परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करने के लिए एक पवित्र बलि की आवश्यकता है। बेतलहेम में उनका जन्म मिस्र को ले जाया जाना, परमेश्वर की दया और मनुष्यों की दया में बढ़ना और नासरत के लोग उनको यूसुफ बढ़ई का पुत्र कहना इत्यादि बातें। घटनाए घटी।

बारह साल की आयु में यीशु ने यरुशलेम में जाने का निर्णय लिया. वे मन्दिर में धर्मगुरुओं की बाते सुनते, उनसे अनेक प्रश्न करते और उनके प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। इस घर्मगुरुओं के समूह में शायद वे अगुवे भी होंगे जिन्होने २१ साल बाद यीशु की मृत्यु का षड्यंत्र रचा। यरुशलेम में ठहर जाने के बारे में जब यूसुफ और मरियम ने यीशु से पूछने पर उन्होने कहा तुम मुझे क्यों ढूँढते थे? क्या नही जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है? तब वह उनके साथ गया, और नासरत में आया और उनके वश में रहा, और उसकी माना ने यह सब बाते अपने मन में रखी। और यीशु बुद्धि और डील डौल मे, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढता गया। लूका २:४९, २:५१-५२

यीशु स्वर्ग छोडकर तथा अनादि वचन रुप से शरीरधारी होकर इस जगत में आने का उद्देश्य पूरा करने के लिए ३० वर्ष की आयु में सेवकाई आरम्भ किया। यूहन्ना के मनफिराव का बपतिस्मा देते समय यीशु का

बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आना यूहन्ना को अच्छा नही लगा। लेकिन यीशु ने कहा अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुईः यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मै अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मत्ती ३:१५-१७। यीशु के बपतिस्मा लेने से पहले यूहन्ना की कही सारी बातों को यीशु ने बपतिस्मा में प्रमाणित किया। यीशु ४० दिन उपवास करने के लिए जगत में ले जाया गया। वहाँ पर परखनेवाले शैतान के द्वारा यीशु ने हमारे ही समान नीचे दी गई परीक्षाओं का सामना किया।

१) भोजन के लिए भूख लगना.... शरीर की अभिलाषा

२) अधिकार की लालसा .... जीविका का घमंड

३) वस्तुओं की लालसा ..... आँखो की अभिलाषा

हर परीक्षा में वह धीरज धरते हुए बहुत ही आज्ञाकारी रहा लेकिन उसने पाप नही किया। हर बार प्रभु यीशु की यह बात कि वह अपने पिता के कार्यो को पूरा करने तथा अपने पिता की इच्छा को पूरा करने को हम देख सकते है। हमें भी अपने विचारो और निर्णयों को परमेश्वर की इच्छा के आधार पर करना चाहिये। पवित्रात्मा की अगुवाई में प्रेरितों की कही बातों को हमें सावधानी से पालन करना चाहिये। ये बातें हमारे लिये नये नियम में लिखी गई है। सुसमाचार हमें परमेश्वर से मेलमिलाप का सन्देश देता है तथा यीशु में हमें अपने पापों की क्षमा पाने का अवसर देता है।

इस जगत में भेजे गए यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के द्वारा प्रत्येक परीक्षा पर सरलता से विजय पाया। हर परमेश्वर के स्वरुप में सृजे गये है इसलिये हम भी ऐसा विजयी जीवन जी सकते है। यह हमें परमेश्वर के अधीन रहने से मिलती है।

प्रश्नः

१. यूहन्ना के अनुसार आदि में पिता परमेश्वर के साथ कौन थे?

अ) .....वचन

ब) .....पवित्रात्मा

स) ..... अ और ब

२. परमेश्वर के स्वरुप में पुत्र परमेश्वर इस जगत में मनुष्य और परमेश्वर के मध्य मेलमिलाप करने के लिये तथा एक निष्पाप बलिदान के रुप में मारे जाने के लिये आये।

अ) .....हाँ ब) .....नही

३. यीशु ने यूहन्ना के द्वारा बपतिस्मा क्यों लिया?

अ) ... मूसा की व्यवस्था के अनुसार करने के लिये

ब) ... अपने पापों की क्षमा के लिये

स) ... सारी धार्मिकता पूरी करने के लिये आज्ञाकारी हुआ

४. यीशु अभिलाषाओं में फँसकर शैतान द्वारा परीक्षाओं में नही पडा क्योंकि वह मनुष्य नही था अर्थात शरीर और माँस युक्त नही वरन आत्मा स्वरुपी था।

अ) .....हाँ ब) .....नही

५. हमारा विश्वास और निर्णय परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होने के लिए हमें परमेश्वर के वचन को सावधानी से पढ़ना चाहिये।

अ) .....हाँ ब) .....नही

खीस्त - पिता की इच्छा को पूरा करना

पाठ-14

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने अपने शिष्यों से यीशु को परमेश्वर का मेम्ना कहा। यीशु के बपतिस्मा लेते समय परमेश्वर ने उनको अपना पुत्र कहा और यह कहा कि मै उससे अति प्रसन्न हूँ. यीशु यहूदियों के परमेश्वर के राज्य की शिक्षा देते हुए तथा अपने वचनों के अनुसार द्वारा अनेक आश्चर्यकर्म किये। यीशु के शत्रु भी उन बातों को नकार नही सकते है। ये आश्चर्यकर्म मनुष्यों के बीच में किये गये। उदाहरण के लिये - कुछ मछलियों और कुछ रोटियों के द्वारा कई हजार लोगों को भोजन खिलाना तथा एक मृतक अर्थात विधवा के पुत्र को गाडे जाने से पहले ही फिर से जिलाया। अंधों को दृष्टि दी और कुष्ट रोगियों को स्वस्थ किया और उनके जीवनों को सुखारा। उन नगरो के सारे लोगों ने इन घटनाओं को देखा। यीशु मृतकों के गाडे जाने के जगह जाकर एक सडे हुए शरीर को मृतकों में से जिलाया। यीशु ने अपने वचन और आश्चर्यकर्मो के द्वारा ज्ञानियो को तथा समाज के अगुवों को अपने परमेश्वर के पुत्र होने का प्रमाण दिया। लोगों ने यीशु का विश्वास किया लेकिन यहूदी अगुवों ने उनका विश्वास नही किया वस, और ज्यादा प्रमाण माँगे।

अपनी सेवकाई में यीशु ने अपने शिष्यों को विशेषकर उन बारह प्रेरितों को कुछ दिनों के बाद अपने पकडवाये जाने को और क्रूस पर चढ़ाए जाने को बारे में बताना आरम्भ किया। इस जगत में सेवकाई आरम्भ करने से लेकर यीशु की सेवकाई के सारे कार्य उसके क्रूस पर चढ़या जाने के कार्यों के अनुसार ही किये गए है। शैतान के सर को स्त्री की सन्तान इस तरह कुचलेगी।

- अपनी सम्पूर्ण आज्ञाकारिता के द्वारा
- अपनी मृत्यु अर्थात पापों के लिए सम्पूर्ण बलिदान चढाने के द्वारा

- अपने पुनरुत्थान अर्थात मृत्यु और कब्र पर विजय पाकर परमेश्वर से मेलमिलाप का मार्ग तैयार किया।
- वह मृत्यु में से विजयी होकर फिर जी उठा।

यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं और उनके उद्धार की योजना को पूरी तरह से समझ पाये या नही समझ पाये या नही समझ पाये तब भी हम से परमेश्वर उनके प्रति आज्ञाकारिता की अपेक्षा करते है। कैन के बलिदान से ज्यादा परमेश्वर हाब्रिल के बलिदान से क्यों प्रसन्ना हुआ? एक बहुत बडे जहाज को क्यो अनेक वर्षों तक में निर्माण किये जाने की आवश्यकता है? द्वार के दोनो चौखटों पर लहू लगाए जाने के द्वारा किस तरह पहिलौटे मृत्यु से बचाए जाते है? विषैले साँपो के डँसने से मरते हुए लोग किस तरह पीतल के साँप को देखकर जीवित बचे रहे? हमें परमेश्वर की योजना प्रणाली ज्ञात हो या नही भी हो लेकिन फिर भी हमें परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण विश्वास और आज्ञाकारिता से उनकी आज्ञाओं को मानना चाहिये। मनुष्य के सीमित ज्ञान में ऐसा करना कठिन होने पर भी उनके परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करना चाहिये।

इसलिये यीशु हमारे पापों की सम्पूर्ण बलिदान करके अपने आप को चढ़ाने के लिये पूरी आज्ञाकारिता से यरुशलेम को जा रहे है। यहूदी धर्मगुरुओं ने यीशु के प्रति शेष, घृणा और अहंकार होने के कारण यीशु के विरोध में षड्यंत्र रचकर उनकी हत्या करने के लिये उन्होंने धन देकर एक व्यक्ति को खरीदा। रोमी न्यायाधीश ने यीशु को तिरपराध घोषित किया लेकिन यहूदियों के दबाव में तथा उन्हें प्रसन्न करने के लिए यीशु को मार डालने के लिये अपनी सहमति दी। यीशु ने अपनी इच्छा के अनुसार ही मनुष्य जाति के पापों के लिये अपने जीवन को सम्पूर्ण बलिदान करके चढाया अब सारी मनुष्य जाति को यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर से मेलमिलाप का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आदम के पाप के द्वारा पतित मानव जाति एक बार फिर उद्धार पाना ही परमेश्वर की प्रणाली योजना है। इस जगत की उत्पत्ति से पहले ही परमेश्वर ने यीशु मसीह में अपनी इच्छा के अनुसार यीशु मसीह को इस जत में भेजकर मेलमिलाप के सुसमाचार को प्रकट किया। इफिसियों

१:३६, रोमियो ८:२८-२९, यूहन्ना १७:५ वचनो को पाकाश्स्त्रमें पढे।

यही मेलमिलाप का संदेश है।

प्रश्नः

१. परमेश्वर की परिपूर्णता को पूरी रीति से समझना या फिर नही समझ पाना - परन्तु उस पर विश्वास करते हुए आज्ञाकारी रहना ही परमेश्वर हमसे चाहते है।

अ) .....हाँ ब) .....नही

२. यरुशलेम लौटकर जाने पर वह मार डाले जाऐंगे यह जानते हुए भी यीशु वहाँ गये। क्योंकि उसी के लिए वह इस जगत में आये थे।

अ) .....हाँ ब) .....नही

३. यीशु ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र साबित करने के लिये किन कार्यों को लिया?

अ) ... आश्चर्य कर्म

ब) ... यूहन्ना बपतिस्मा देने वाली की गवाही

स) ... अपने बारे में यीशु द्वारा कहीं बातें

द) ... ऊपर लिखी सारी बातें।

४. अपनी सेवकाई के अन्त में यीशु क्यों यरुशलेम को गये?

अ) .....फसह बर्व के बारे में शिष्यों के पूछने के कारण

ब) ..... रोमी प्रशासन ने इसकी आज्ञा दी

स) ..... यीशु परमेश्वर का पुत्र है इसे साबित करने के लिये

द) ..... मानवजाति के लिए सम्पूर्ण बलिदान करके चढाने के लिए

५. रोमी अधिकारी पिलातुस ने यीशु को निरपराध घोषित किया

अ) .....हाँ ब) .....नही

सुसमाचार सन्देश

पाठ-15

प्रेम, दया, शान्ति, खराई और सत्य जैसे ईश्वरीय गुणों से परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की। परमेश्वर ने मनुष्य को वाटिका की देखभाल करने और भले-बुरे का ज्ञान वाले वृक्ष के फल को नही खाने की आज्ञा दी। वास्तव में ईश्वर के सदगुण। केवल मनुष्य को ही मालूम है। भलाई शैतान का गुण नही है। परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी इसका अर्थ यह है कि मनुष्य में सोचने की, कारण जानने की और निर्णय लेने की क्षमता है। एक झूठ पर विश्वास करना और उसका अनुसरण करने के लिए उसे चुनना इस बात को साबित करता है कि मनुष्य में चुनने की क्षमता है। इस तरह मनुष्य परमेश्वर से विरोध विद्रोह करने के कारण ही शैतान का मनुष्य पर अधिकार होने का कारण हुआ और यह उसे मृत्यु मार्ग में ले गया। इसलिये मनुष्यों को उनके पापों से बचाने के लिए और मृत्यु के ऊपर अधिकार के लिए एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता हुई। इसी कारण मनुष्यों के पापों का हरने। छुडाया जाना भेडों या बकरिस्तें के लहू के द्वारा संभव नही है। इब्रानियों १०:१४

मसीह में हम छुटकारे को देख सकते है। वह इस तरह कि मसीह के सुसमाचार के द्वारा मनुष्य को छाटकारा मिलता है। मसीह के सुसमाचार का सारांश हैः

- आदि में वचन था वही यीशु ख्रीस्त, अभिषिक्त मसीह है।
- वचन देहधारी होकर हमारे मध्य में निवास किया
- यीसु मसीह में कोई भी पाप नही है।
- क्रस की मृत्यु के लिए यीशु आज्ञाकारी हुआ
- मनुष्य को शैतान की दासता से छुडाने के लिए और पाप और मृत्यु पर जय पाने के लिये परमेश्वर ने यीशु को मृत्यु से जिलाया।
- यीशु जहाँ से आये थे अर्थात स्वर्ग को ऊपर चले गये।

- यीशु ने प्रकट किया कि जो लोग यीशु के लहू के द्वारा पापों की क्षमा को पाते है वे विश्वास में स्थिर रहकर उद्धार पायेंगे। यीशु में हमारा मेलमिलाप हुआ है। यीशु ने कहा मार्ग और सत्य और जीवन मै ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नही पहुँच सकता। यूहन्ना १४:६ तथा .... परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को माने, और उसकी आज्ञाए कठिन नहीं है।

एक उद्धारकर्ता के आगमन की भविष्यद्वाणीः

अब्राहम के द्वारा पृथ्वी के सारे जन आशीष पायेंगे। परमेश्वर की इस वचन को हमने पाट ४ में सीखा। परमेश्वर दाऊद के बारे में कहते है मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मै उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा। २ शमूएल ७:१३ तथा भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। यशायाह ७:१४ कई सौ सालों के बाद जिब्राईल स्वर्गदूत ने कुवाँरी मरियम से यह कहा कि वह एक पुत्र को जन्म देगी। देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा और उसके राज्य का अन्त नहीं होगा। लूका १:३१-३३ उद्धारकर्ता के बारे में गवाही।

स्वर्गदूत जिब्राईल ने मसीह के जन्म के बारे में प्रकट किया। बपतिस्मा देने वालें यूहन्ना ने यह गवाही दी। तो उसने मान लिया और इन्कार नही किया। परन्तु मान लिया कि मै मसीह नही हूँ। यूहन्ना १:२२ पढ़े। यरदन नदी में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा पाते समय परमेश्वर ने यह गवाही दी ..... यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मै अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मत्ती ३:१७

अपने नगर नासरत में आराधनालय में यीशु ने यशायाह की पुस्तक से पढ़ा और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ पर लिखा थाः प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालो को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है और मुझे इस लिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले

हुओ को छुडाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ। लूका ४:१७-२०

यीशु ने इन भविष्यद्वाणी के वचनो को प्रभावित करने के लिए बहुतेरे रोमियों, अंधो और बहरों को चंगा किया। मरे हुओ को जिलाया और मृतक तथा सडे हुए शरीर को भी जिलाया। इस तरह यीशु ने अधिकार के साथ अपने आप को परमेश्वर का तथा मनुष्य का पुत्र करका प्रमाणित किया।

मनुष्य के पापो से छुटकारे के लिए एक निष्पाप बलि की आवश्यकता हुई इसलिये यीशु ने अपने शरीर को अर्पित किया। यीशु के क्रूस पर मारा जाना, गाडा जाना और जिलाया जाने के द्वारा हुए बलिदान को परमेश्वर ने ग्रहण किया। परमेश्वर के स्वरुप में होते हुए भी अपनी सृष्टि में रक्त और माँस (शरीर) धारण करने का निर्णय लिया। इसकी आवश्यकता क्यों हुई? क्योंकि मनुष्य यह जान सके कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है तथा यीशु को पाप क्षमा करने की शक्ति और अधिकार है। यीशु मसीह में ही सारी मानव जाति के पापों की क्षमा है।

भीड ने यीशु की शिक्षाओं को सुना लेकिन समझ नही पाए क्योंकि लोगों ने अपनी मान्यताओं से अलग बातों को सुना था। यीशु की शिक्षा एक प्रेम संदेश है। उनकी शिक्षाओं के बारे में पवित्र शास्त्र में थों लिखा है।

क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोएं हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने के लिया आया है। लूका १९:१०. हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मै तुम्हें विश्राम दूँगा। मत्ती ११:२८. प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नही करता, जैसी देर कुछ लोग समझते है, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नही चाहता है कि कोई नष्ट हो, वरन यह कि सब को मनफिराव का अवसर मिले। २ पतरस ३:९. यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिकियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। प्रेरितो के काम ४:११. .....उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया। हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ साहित हम पर बहुतायत से किया क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था।

इफिसियो १:६-९ इसलिए मनुष्यों की पाप क्षमा को हम मसीह में पाते है। इस तरह हमें शुभ संदेश अर्थात यीशु मसीह के सुसमाचार के संदेश के द्वारा पापों की छुटकारा प्राप्त होता है।

हे भाईयो, अब मैं तुम्हे वही सुसमाचार बताता हूँ... जिसे तुमने अंगीकार भी किया था।.... मैने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी। कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाडा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। कोरिन्थियो १५:१-४

प्रश्नः

१. मनुष्य के पापों के लिए सम्पूर्म बलिदान करके अपने आप को चढ़ाने के लिए परमेश्वर का पुत्र यीशु इस जगत में आए।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
२. यीशु के पास परमेश्वर की शक्ति होने और सर्वाधिकार होने का प्रमाण नही है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
३. उद्धार की प्राप्ति कहाँ होती है?
   अ) ... विभिन्न संस्कृतियों में
   ब) ... यीशु मसीह में
   स) ... मूसा में
   द) ... पोप में
४. सुसमाचार संदेश अर्थात यीशु का जीवन, मारा जाना, गाडा जाना, फिर तीसरे दिन जिलाया जाना और स्वर्ग में उठाया जाना - हमें पापों की क्षमा देकर परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप करता है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
५. परमेश्वर (पिता) के पास आने के लिए तथा उनसे मेलमिलाप के लिए अनेक मार्ग है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही

यीशु का अपनी कलीसिया की स्थापना करना

पाठ-16

इस जगत में अपनी सेवकाई के दिनों में यीशु ने अपने शिष्यों से ऐसा कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो शमौन पतरस ने उत्तर दिया, तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसके उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि माँस और लोहू ने नही, परन्तु पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मै भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मै इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मत्ती १६:१५-१८

कलीसिया नामक शब्द ग्रीक भाणा में (ekklesia) से लिया गया है जिसका अर्थ है बुलाए गए लोग अर्थात, एक समूह या एक विशेष तरह का धार्मिक समाज (यहूदी आराधनालय या मसीहियों की मंडली या स्वर्ग में पकिगें की सहभागिता या फिर ये सभी) Strongs Greek Hebrew Dictionary रोमी प्रशासन की न्याय पालिका ने यीशु की निन्दा करने वाले समूह के समक्ष उनको दोषी ठहराते हुए परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढाया। राजाओं के राजा यीशु नासरी को एक अपराधी के समान दोष लगाकर उनको क्रूस पर चढाया। पाखंडी यहूदी और उनके धर्मगुरुओं ने यीशु की निन्दा की और उसके क्रूस पर चढाए जाने को देखकर आनंदित हुए।

यीशु की मृत्यु के समय यरुशलेम पर तीन घंटे घोर अंधकार छाया रहा। यीशु की मृत्यु के समय की घटनाओं को यूहन्ना ने इस तरह लिखा। वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ दो मनुष्यों को क्रूस पर चढाया। एक हो इधर और एक को उधर और बीच में यीशु को। पिलातुस ने एक दोष पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, और उसमें यह लिखा हुआ था, यीशु नासरी, यहूदियों का राजा। यह दोषपत्र बहुत से लोगों ने पढा, क्योंकि वह स्थान

जहाँ यीशु क्रूस पर चढाया गया था, नगर के पास था, और पत्र इब्रानी और लातीनी और यूनानी में लिखा हुआ था। यूहन्ना १९:१८-२०.

धरती काँपी और चट्टाने चटक गई। जो पवित्र मृतक थे वे फिर जीवित होकर कब्रों में से निकल आए। (यीशु के पुनरुत्थान, के बाद नगरों में प्रवेश करके वे अनेक लोगों को दिखे।) रोमी सैनिकों ने भी घटित घटनाओं को देखकर जिस तरह पिलातुस ने क्रूस पर लिखा उसी तरह उन्होंने भी कहा यह मनुष्य निश्चय ही परमेश्वर का पुत्र है। यहूदियों ने तो यीशु को दोषी ठहराया। लेकिन इन घटनाओं के बाद अनेक यहूदियों ने तथा उनकी निन्दा कर क्रूस पर चढाने वाले धर्मगुरुओं ने भी जाना होगा कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है। इस घटनाओं के बारे में वे क्या सफाई दे सकते हैं? उन्होंने यीशु पर विश्वास नही करना चाहा इसलिए उन्होने इन घटनाओं पर कोई प्रतिक्रिया नही की।

लेकिन यीशु को कब्र नही रोक सकती थी इसलिए परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिलाया। क्योंकि इस जगत में यीशु की सेवकाई अभी पूरी नही हुई थी। अपने शिष्यों को तथा प्रेम करने वालों का अपने फिर से जीवित होने का प्रमाण देने के लिए वह उन्हे फिर दिखा तथा ठहराए हुए प्रेरितों को यह निर्देश दिया। स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हे सब बातें जो मैंने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। मत्ती २८:१८-२०

प्रेरितों के काम २:३७ में पतरस के कहे अनुसार सुनने वालो के ह्रदय छिद्र गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगें। हे भाईयों, हम क्या करे? जिस तरह परमेश्वर ने २ दिनों में लोगो को अवसर दिया ठीक उसी तरह आज हमें भी परमेश्वर अवसर दे रहें है। जिस तरह उन लोगों ने पतरस की बातों पर प्रतिक्रिया की ठीक उसी तरह आप भी ध्यान देकर प्रतिक्रिया जवाब दें। स्वर्ग जाने के दस दिनों के पश्चात पिन्तेकुस्त पर्व के दिन यीशु ने प्रेरितो के काम दूसरे अध्याय में लिखी बातों के अनुसार कलीसिया की स्थापना की। वह कलीसिया जिसे उसने अपने लाभ से मोल लिया है। प्रेरितों के काम २०:२८, और उस कलीसिया सिर यीशु ही है

कुलुस्सियों १:१८, और कलीसिया उसकी देह और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है। इफिसियों १:२३

प्रश्नः

१. पापरहित अपने शरीर को यीशु ने मनुष्यों के पापों के लिए सम्पूर्ण बदिदान करके चढाया।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
२. उद्धार पाए हुए लोग अर्थात यीशु के शरीर में भागी लोग जीवित परमेश्वर के मंदिर होकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते है न कि किसी संस्थान के अनुसार चलते है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
३. यीशु के द्वारा स्थापित कलीसिया अर्थात जगत के पापों से छुडाए जाकर यीशु की आज्ञाओं को मानने वाले लोगों का समूह है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
४. यीशु के कलीसिया की नींव कौन है?
   अ) ..... प्रेरित
   ब) ..... मन्दिर या आराधनालय
   स) ..... परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह
५. यीशु के शरीर अर्थात यीशु की कलीसिया में लोग किस तरह जोडे जाते है?
   अ) ..... वारिस होने के द्वारा
   ब) ..... सदस्यों के वोट डालने से
   स) ..... परमेश्वर के द्वारा

मेलमिलाप का सन्देश

उत्तर

नाम ..... सन्दर्भ क्रमाँक

पता और दूरभाष .....अंक

पाठ-1

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-2

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-3

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-4

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-5

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-6

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-7

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-8

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-9

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

पाठ-10

1_____ 2_____ 3_____ 4_____ 5_____

अपने उत्तरों को निम्न पते पर भेटिए
भाई एस.एम.विनय कुमार निदेशक
बाइबिल पत्ताचार कोर्स
चर्चगली, चंद्रबाबु कालनी, नायुडु पेटा - 524126,
जिला नेल्लोर, आंध्रप्रदेश, भारत
दूरभाषः 9885845588, 9494473488

बाइबिल में उल्लेखित व्यक्तियों के निर्णय

पाठ-17

हम हर दिन कई निर्णय लेते है। उनमें से कुछ निर्णय प्रतिदिन की दिनचर्या ही होती है जैसे कि भोजन करना, कपडे पहनना, चलना और बातचीत करना आदि। मनुष्य के इस तरह के निर्मयों के कारण कुछ सन्देर्भों में बहुत ही ज्यादा संतोष और आनन्द प्राप्त होता है लेकिन उन ही निर्णयों के कारम दूसरों को निरुत्साह और तकलीफ भी पहुँचती है। कई बार हम पारिवारिक संबन्धो को बनाए रखने के लिए कुछ गंभीर निर्णय लेते है। कुछ निर्णय हमारे धार्मिक विश्वास से या फिर नौकरी से जुडे होने के कारण हमारे लिए वह जीवन और मरण के बीच अपने जीवन को बनाए रखने से संबंधित होते है। हमें मालूम है कि कुछ व्यक्ति सही निर्णय लेते है तो कुछ गलत निर्णय लेते है। वह निर्णय सही हो या गलत प्रत्येक निर्णय का एक प्रतिफल या परिणाम होता है। पवित्रशास्त्र में कुछ लोगों ने जो निर्णय लिया और उसका जो प्रतिफल पाया उसे हम देख सकते है।

निर्णय	**उनका प्रतिफल या परिणाम**
वर्जित फल को आदम और हव्वा ने खाया।	मृत्यु, अदन की वाटिका से निकाला जाना और दुःख पाना।
कैन ने ऐसी भेंट चढाई जो ग्रहणयोग्य नही थी।	परमेश्वर ने उसकी भेंट का तिरस्कार किया।
कैन ने अपने छोटे भाई की हत्या की	परमेश्वर द्वारा चिन्हित एक भगोडा बना।
नूह ने जहाज बनाया	धर्मी ठहराया गया और समस्त मनुष्य जाति को बचाया।
अब्रहाम का अपने पुत्र को बलिदान करके चढाना	प्रतिज्ञाओं को पाना

मूसा ने परमेश्वर का अनुसरण किया।	एक बडी जाति का अगुवा बना
परमेश्वर के कार्य में सहमत होने के लिए मरियम ने स्वीकार किया	हमारे पापों के लिए बलिदान हुए यीशु को जन्म दिया
धन के लिए इस्करियोति यहूदा ने यीशु को सौंप दिया	आत्महत्या किया
पौलुस मनफिराव करके आज्ञाकारी होकर बपतिस्मा लिया।	अन्यजातियों के लिए सुसमाचार का प्रेरित हुआ।

परमेश्वर को प्रसन्न करना तथा उनके प्रति आज्ञाकारी होना और परमेश्वर के लोगों के साथ बढ़ना से संबंधित अनेक अवसर हम प्रतिदिन पाते है। नीचे दी गई विषयों पर विचार कीजिए।

- हमारे व्यापार में, परिवार में और आध्यात्मिक जीवन में क्या हम ईमानदारी दिखाऐंगे या दिखा रहे है?
- क्या हम अपने आप से, अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे या अभी विश्वासयोग्य है?
- क्या हम अपने मन को, आँखो और जुबान को नियंत्रण में रखेंगे क्या नियंत्रण में रख रहे है?
- क्या हम आज्ञाकारी होकर और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करेंगे? क्या मेलमिलाप कर रहे है।

हम अपने निर्णयों के द्वारा अच्छाई या बुराई का सामना करते है। अगर मनुष्य के विचार परमेश्वर के विरोध में हों तो उनका प्रतिफल भी परमेश्वर के विरोध में ही होगा। मनुष्यों की बनाई हुई विधियाँ भी उसी तरह की है। यीशु ने उनसे कहा कि यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है। ये लोग होंठो से तो मेरा आदर करते है पर उनका मन मुझ से दूर रहता है और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते है। मत्ती १५:६-९ मनुष्यों के आचार-विचार, विधियाँ और निर्णयों के द्वारा परमेश्वर के वचन को उपेक्षित नही करना चाहिए।

प्रश्नः

१. हमारे जीवन का हर निर्णय गंभीर निर्णय है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
२. हमारे निर्णय निरंतर हमारे जीवन को प्रभावित करते है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
३. बाइबिल में उल्लेखित जिन लोगों ने अनाज्ञाकारिता को चुना उन्होने प्रतिफल में तकलीफ और दुःख पाया और जिन लोगों ने आज्ञाकारित को चुना वह उनके लिए आनंद और संतोष का कारण बना।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
४. आदम और हव्वा के निर्णय से क्या प्रतिफल मिला?
   अ) ..... दुःख और मृत्यु
   ब) ..... बहुत आशीष पाए
५. पौलुस के निर्णय का प्रतिफल
   अ) ..... अन्यजातियों के लिए प्रेरित
   ब) ..... यहूदी धर्म का अगुवा बना
   स) ..... यहूदियों की पाठशाला में रब्बी हुआ।

यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर विश्वास करना

पाठ-18

मनफिराव के बारे मे प्रचार करने वाले यीशु ने ऐसा भी प्रचार किया। यीशु ने उससे कहा ..... और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है। यूहन्ना ११:२६

समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, मन फिराओं और सुसमाचार पर विश्वास करो। मरकुस १:१५

यीशु ने पुकारकर कहा जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नही वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। मै जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करें वह अन्धकार में न रहे। यदि कोई मेरी बाते सुनकर न माने, तो मै उसे दोषी नही ठहराता, क्योंकि मै जगत को दोषी ठहराने के लिए नही, परंतु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूँ। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बाते ग्रहण नही करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक हैः अर्थात जो वचन मैने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहरायेगा। क्योंकि मैने अपनी ओर से बाते नही की, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ? और मै जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए मै जो कुछ बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूँ। यूहन्ना १२:४४-५०

यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आऐगें और उसके साथ वास करेंगें। जो मुझ से प्रेम नही रखता वह मेरे वचन नही मानता, और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नही वरन पिता का है, जिसने मुझे भेजा। यूहन्ना १४:२३-२४.

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नष्ट न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना ३:१६

यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओंः और देखों मै जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। मत्ती २८:१८-२०

हम परमेश्वर के स्वरुप में सृजे गए है। हमें निर्णय लेने का और कार्य को करने का सामर्थ्य दिया गया है। भविष्यद्वाणी और उनका पूरा होना भी हमने देखा है। मनुष्य का परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करने के लिए परमेश्वर द्वारा एक मार्ग, एक विधि और एक प्रणाली का बनाया जाना भी हम देखते है। अधर्म और पापों को छोडने के लिए यीशु ने मनफिराव का प्रचार किया। यीशु ने हमें प्रेम, भलाई और खराई की शिक्षा दी। वही इस धरती पर उतरा हुआ। मसीहा अर्थात ख्रीस्त है और उसी पर भरोसा करने के लिए उसने विश्वास की शिक्षा दी है। हमारें पापों के लिए वही हमारा संम्पूर्ण बलिदान है। उनकी आज्ञाओं के मानने के द्वारा हम यीशु पर अपने विश्वास को सूचित करते है।

यीशु की शिक्षा अधिकार के साथ है। वास्तव में पुनरुत्थान के बाद यीशु को सारा अधिकार दिया गया है। यीशु की शिक्षा, देखी गई या सुनी गई बातों से ज्यादा प्रभावशाली थी। यह शिक्षा मनुष्यों में बदलाव था परिवर्तत की अपेक्षा करती है। हमारी जीवन शैली में बदलाव लाने वाला परमेश्वर का प्रेम ही यीशु का संदेश है।

क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को माने, और उसकी आज्ञाऐ कठिन नहीं है। १ यूहन्ना ५:३

और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चले, यह वही आज्ञा है जो तुमने आरम्भ से सुनी है और तुम्हे उस पर चलना भी चाहिए। २ यूहन्ना १:६

क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि वह आत्मा नाप-नापकर नही देता। यूहन्ना ३:३४

उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन, जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ - यह जीवन प्रकट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते है, और तुम्हे उस अनन्त जीवन का समाचार देते है जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ - १ यूहन्ना १:१-२

प्रश्न:

१. यीशु के पास सारे अधिकार है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
२. कोई भी व्यक्ति यीशु पर विश्वास कर सकता है लेकिन यीशु के वचनों के अनुसार चलना था आज्ञाकारी होना आवश्यक नही है।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
३. यीशु ने इस तरह की शिक्षा दी।
   अ) ..... मुझ पर केवल विश्वास करो
   ब) ..... विश्वास करके अपने जीवन में बदलाव और मनफिराव पाएं
   स) ..... शिष्य बनाना और उनको बपतिस्मा देना
   द) ..... अ और ब ई) ..... ब और स
४. इन बातों के लिए यीशु हमारे जीवन में बदलाव की अपेक्षा करते है।
   अ) ... अपने प्रति
   ब) ... दूसरों के प्रति
   स) ... परमेश्वर के प्रति
   द) ... ऊपर दी गई सारीं
५. प्रेरित यूहन्ना ने यीशु के बारे में गवाही देते हुए क्या कहा?
   अ) ..... मैने यीशु को देखा है
   ब) ..... मैने यीशु को सुना है
   स) ..... मैने उनको छुआ है
   द) ..... ऊपर की सारी बातें

आज्ञाकारिता - प्रेम का प्रमाण

पाठ-19

परमेश्वर पर विश्वास रखने के लिए यीशु ने प्रेम और विश्वास के संदेश की शिक्षा दी। इस सांसारिक मार्गों और पापों से हमारी जीवनशैली बदलकर हमे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा से मेलमिलाप करके उनकी आज्ञाओं के अधीन रहना चाहिए।

प्रेम के द्वारा आज्ञाकारिता किसी तरह के समझौते से नही आती है। या फिर केवल वह ही वास्तविक आज्ञाकारिता नहीं है। आज्ञाकारिता हम पर जबरदस्ती नही थोपी जाती है या फिर आर्थिक सहायता के द्वारा भी नहीं आती है। मांगी गई, प्रार्थना की गई, बिना किसी कारण के या बिना किसी आवश्यकता के प्रेम प्रदर्शित किया जाता है। आज्ञाकारी प्रेम एक स्वेच्छा से किया गया कार्य है। क्योंकि जिनसे आप प्रेम रखते है उनको आप प्रसन्न करते है।

इस तरह की आज्ञाकारिता के अनेक उदाहरणों को पिछले अध्याय में हमने देखा। उनमे से कुछः-

- निर्देश दिये गये माप के अनुसार जहाज को बनाने के लिए नूह को कई साल लग गए।
- जलप्रलय के बाद, सूखी भूमि पर पैर रखने के बाद नूह ने एक वेदी बनाई और बलिदान चढाए। ऐसा उसने परमेश्वर के प्रति प्रेम के कारम किया।
- अब्राहम ने अपने घर या समूह में सारे नरों का खतना किया
- केवल मानवीय दृष्टिकोण से देखने पर इसका कोई कारण नही दिखता लेकिन उसे ऐसा करने को परमेश्वर ने कहा।

अपने एकलौते प्रतिज्ञात पुत्र को पहाड पर लाकर बलिदान चढाने के लिए अब्राहम ने एक वेदी बनाई। मनुष्य के विचार से यह एक हत्या होती इसलिए कोई साधारण व्यक्ति इस कार्य को नही करेगा। लेकिन अब्राहम का परमेश्वर पर सम्पूर्ण विश्वास होने के कारण उसने ऐसा किया।

फिरौन और उसकी सेना इस्त्राएलियों का पीछा करते समय लाल समुद्र के पास आने पर वे डर गये। इस्त्राएली उस लाल समुद्र को पार करने के लिए किसी भी तरह के आश्चर्यकर्म को क्या किसी ने सोचा था? लेकिन मूसा अपने विश्वास और अपने प्रित परमेश्वर पर उसके भरोसे के कारण आज्ञाकारी हुआ और इसलिए लाल समुद्र ने उन्हे रास्ता दिया।

यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म और लगभग तीन साल तक उनकी शिक्षा यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने का प्रमाण देती है। अन्त के समय यीशु ने अपने मुख को यरुशलेम की ओर किया। यह जानकर भी कि यहूदी उन्हे रोमी सैनिकों के साथ मिलकर मार डालेंगे फिर भी यीशु ने यरुशलेम जाने का निर्णय लिया। अपनी इच्छा से ही यीशु अपने प्राण देने के लिए यरुशलेम आए। केवल इसीलिए वह स्वर्ग छोडकर इस धरती पर आए। यीशु की आज्ञाकारिता को उनके सामने रखी गई क्रूस की मृत्यु के विषय में यीशु की प्रार्थना में हमें दिखाई देती है। मत्ती २६:४२

प्रभु यीशु ने पिता परमेश्वर से प्रेम किया इसलिए आज्ञाकारी होकर पिता की इच्छा के अनुसार ही किया। इसी तरह प्रेरितों ने प्रभु से प्रेम किया इसलिए वे प्रभु और उसके वचनों के प्रति आज्ञाकारी हुए। इसी तरह अगर हम भी वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते है तो पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के संदेश को मानेंगे। अगर हम प्रेम दिखाते हुए पवित्रशास्त्र का आज्ञाकारी न बनें तो हम सत्य का पालन नही करते है।

इसलिए हमें परमेश्वर से मेलमिलाप करने के लिए उनके प्रति आज्ञाकारी होने का अवसर आने पर, हमे प्रत्यक्ष में कोई कारण नही भी दिखने पर हम उसके प्रति आज्ञाकारी होते है क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते है। यीशु के समान हम भी तेरी इच्छा पूरी होने पाए कहकर परमेश्वर के अधीन रहें।

प्रश्न:

१. अगर हम किसी से प्रेम रखते है तो उनके चाहे हुए कार्यों को करते है। क्योंकि

अ) ..... हम यह समझते है कि यह एक अच्छा कार्य है।

ब) ..... हम यह समझते है कि यह वांछनीय कार्य है।

स) ..... जिनको हम प्रेम करते है उन्हें यह प्रसन्न करता है।

२. पारिवारिक तनाव, आर्थिक या राजनीतिक सहायता, डराकर या फिर भेंट देकर प्रेम पाया जा सकता है।

अ) .....हाँ ब) .....नही

३. यह जानते हुए भी कि यहूदी उन्हे पकडेंगें फिर भी यीशु फसह मनाने के लिए यरुशलेम को गए

अ) .....हाँ ब) .....नही

४. उद्धार के बारे में यीशु की शिक्षा के प्रति हमारी प्रतिक्रिया उनकी इच्छा के अनुसार होनी चाहिए।

अ) .....हाँ ब) .....नही

५. यीशु की आज्ञाओं के अधीन नही रहते हुए भी हर व्यक्ति परमेश्वर से मेलमिलाप कर सकता है क्योंकि यीशु समस्त मनुष्य जाति के लिए मरा।

अ) .....हाँ ब) .....नही

मसीह द्वारा स्थापित कलीसिया में लोगों का मिला दिया जाना
पाठ-20

प्रथम सदस्य

यीशु का अपने पिता के पास स्वर्ग में लौटने से पहलेः

यों लिखा है कि मसीह दुख उठाएगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मै उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहों। लूका २४:४६-४९. तब वे जैतून नामक पहाड से जो यरुशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरुशलेम को लौटे। प्रेरितो के काम १:१२.

यीशु के स्वर्ग जाने के १० दिनों के पश्चात यरुशलेम में १२० शिष्य अटारी पर जमा हुए। जैसे ही पवित्रात्मा उन पर उतरा वे उन अलग-अलग भाषाओं को बोलने लगें जो उन्हें पहले नही आती थी। तब उस जगह एक बडी भीड इकट्टी हुई तब प्रेरितो ने क्रूस पर चढाए हुए यीशु मसीह के बारे में बताकर मनफिराव और पापों की क्षमा का प्रचार किया।

पिन्तेकुस्त के दिन

यहूदियो के प्रश्नो का पतरस ने इस तरह उत्तर दिया। मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। और उसने बहुत बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढी जाति (पीढ़ी) से बचाओ अतः जिन्होने उनका वचन ग्रहण किया उन्होने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार लोगों के लगभग उन में मिल गए। प्रेरितों के

काम २:३८-४१.

सामरिया के लोग और जादूगर शमौन

फिलिप्पुस परमेश्वर के राज्य के बारे में और मसीह के नाम के बारे में सुसमाचार प्रचार करने लगा। तब सामरिया के स्त्रियों और पुरुषों ने प्रभु पर विश्वास किया। और उस नगर में बडा आनन्द छा गया। विश्वास करने वालों में जादूगर शमौन भी था जिसने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया और वह फिलिप्पुस के द्वारा चिन्ह और बडे-बडे सामर्थ्य के कार्य होते देखकर चकित होता था। प्रेरितों के काम ८:१२-१३, १८, २०-२२ पढें।

कुश देख का खोजा या नपुंसक

कुशियों की रानी कंदाकें का मंत्री और खजाँची खोजे ने यीशु का सुसमाचार सुना और बपतिस्मा लिया। तब फिलिप्पुस ने दुपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुँचे। तब खोजे ने कहा, देख, यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है। उसने उत्तर दिया, मै विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खडा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनो जल में उतर पडे, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया। प्रेरितों के काम ८:३५-३८ पढें।

तरसुसवासी पौलुस

दमिश्क में हन्नयाह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह। उसने कहा, हाँ प्रभु। तब प्रभु ने उससे कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूधा के घर मे शाउल नामक एक तरसुसवासी को पूछः क्योंकि देख वह प्रार्थना कर रहा है, और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते हुए देखा है। ताकि फिर से दृष्टि पाए। प्रेरितों के काम ९:१०-१२ ..... तब हनन्याह उठकर उस घर में गया और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात यीशु जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तूझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो जाए। और तुरन्त उसकी आँखों से छिलके से गिरे और वह

देखने लगा, और उठकर बपतिस्मा लिया, फिर भोजन करके बल पाया। वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। प्रेरितों के काम ९:१७-२०.

कुरनेलियुस

पतरस जब कुरनेलियुस के घर में उसके घराने और मित्रों को यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया तब ही पवित्र आत्मा वचन के सुनने वालों पर उतर आया। इस पर पतरस ने कहा क्या कोई जल को रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाए, जिन्होने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उन्हे यीशु मसीह के नाम मे बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहें प्रेरितों के काम १०:४४-४८ पढें।

लूदिया

लूदिया नामक थुआथीरा नगर की बैंजनी कपडे बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चिन्त लगाए। जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया तो उसने हम से विनती की, यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो, और वह हमें मनाकर ले गई। प्रेरितों के काम १६:१४-१५

फिलिप्पी का दारोगा

फिलिप्पी का दारोगा ने दीया मंगवाकर भीतर लपका, और काँपता हुआ पौलुस और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा, और उन्हे बाहर लाकर कहा, हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मै क्या करूं। उन्होने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना तो तू और तेरा धराना उद्धार पाएगा। और उन्होने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। रात को उसी घडी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। प्रेरितो के काम १६:२९-३३ दारोगा ने परमेश्वर के वचन को सुना और उस पर विश्वास करके उद्धार पाकर उसने बपतिस्मा लिया।

यूहन्ना के चेले

जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे प्रदेश में होकर इफिसुस में आया। वहाँ कुछ चेलों को देखकर उनसे कहा, क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्रात्मा पाया? उन्होंने उससे कहा, हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी। उसने उनसे कहा, तो फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया? उन्होने कहा, यूहन्ना का बपतिस्मा, पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह कहकर मनफिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आने वाला है उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना। यह सुनकर उन्होने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। प्रेरितों के काम १९:१-५

पौलुस रोम से मसीहियो और सुसमाचार को ग्रहण किए हुए सभों को लिखता है कि क्या तुम नही जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाडे गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चले। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए है, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। हम जानते है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसका साथ क्रूस पर चढाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। रोमियों ६:३-६

प्रश्नः

१. पिन्तेकुस्त के दिन यीशु ने पवित्रात्मा को उन पर उंडेलने पर तीन हजार लोगों ने उद्धार पाकर बपतिस्मा लिया।
   अ) .....हाँ ब) .....नही
२. पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने मन फिराव और बपतिस्मा का प्रचार किया।
   अ) आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य के लिए
   ब) रोमियों से छुटकारा पाने के लिए
   स) पापों की क्षमा पाने के लिए

३. तरसुसवासी पौलुस पर पवित्रात्मा के उंडेले जाने के द्वारा वह प्रेरित बना।

अ) .....हाँ ब) .....नही

४. कुश के मार्ग मे जाते समय फिलिप्पुस ने एक कटोरे में जल लेकर उसे खोजे के सिर पर उंडेल कर उसको बपतिस्मा दिया।

अ) .....हाँ ब) .....नही

५. मसीह मे बपतिस्मा पाने वालों के लिए रोमियों की पत्री में पौलुस ने ऐसा कहा।

अ) ..... मृत्यु में बपतिस्मा

ब) ..... यीशु के पुनरुत्थान का सादृश्य

स) ..... नए जीवन को पाना

द) ..... ऊपर की सारी बातें